B.A. (Part I) EXAMINATION, 2018

हिन्दी साहित्य

प्रथम प्रश्न-पत्र—आदिकाल एवं भक्तिकाल

(For Non-Collegiate Candidates)

Time Allowed : Three Hours Maximum Marks : 100

नोट : (लघूत्तरात्मक तथा वर्णनात्मक) प्रश्नों के उत्तर मुख्य उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें। लघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर प्रश्नों के क्रमानुसार ही दें। इसी प्रकार किसी भी एक वर्णनात्मक प्रश्न के अन्तर्गत पूछे गए विभिन्न प्रश्नों के उत्तर, उत्तर-पुस्तिका में अलग-अलग स्थानों पर हल करने के बजाय एक ही स्थान पर क्रमानुसार हल करें। प्रश्नों के उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न-पत्र पर रोल नम्बर अवश्य लिखें।

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए— 4×10=40

(क) पंथी, एक सँदेसड़इ, लग ढोलइ पैहचाइ।
विरह महाविस तन वसइ, ओखद दियइ न आइ॥
पंथी एं सँदेसड़इ, लग ढोलइ पैहच्याइ।
धँण कँमलाँणी, कमदणी, सिसहर ऊगइ आइ॥ 10

अथवा

दिल्ली चहुआंन। तपै अति तेज षग्ग बर॥
चंपि देस सब सीम। गंजि अरि मिलय धनुद्धर॥
रयन कुमर अति तेज। रोहि हर पिट्ठ बिसंमं॥
साथ राव चामंड। करै काल कित्ति असंमं॥
मेवास बास गंजै द्रगम। नेह नेह बद्ढै अनत॥
मातुलह नेह भानेज पर। भागनेय मातुल सुरत॥ 10

(ख) यहु तन जालौं मसि करौं, लिखौं राम का नाउँ।
लेखणिं करूँ करंक की, लिखि लिखि राम पठाउँ॥
कबीर पीर पिरावनीं, पंजर पीड़ न जाइ।
एक ज पीड़ परीति की, रही कलेजा छाइ॥
चोट सताँणी बिरह की, सब तन जरजर होइ।
मारणहारा जाँणिहै, कै जिहिं लागी सोइ॥ 10

अथवा

ऊधौ मन न भए दस बीस।
एक हुतौ सौ गयौ स्याम सँग, कौ अवराधै ईस॥
इंद्री सिथिल भई केसव बिनु, ज्यौं देही बिनु सीस।
आसा लागि रहति तन स्वासा, जीवहिं कोटि बरीस॥
तुम तौ सखा स्याम सुंदर के, सकल जोग के ईस।
सूर हमारें नंद-नँदन बिनु, और नहीं जगदीस॥ 10

(ग) राज सुरेस पचासक को बिधिके करको जो पटो लिखि पाएँ।
पूत सुपूत, पुनीत प्रिया, निज संदरताँ रतिको मदु नाएँ॥
संपति-सिद्धि सबै 'तुलसी' मनकी मनसा चितवैं चितु लाएँ।
जानकी जीवनु जाने बिना जग ऐसेउ जीव न जीव कहाएँ॥ 10

अथवा

सिंघलद्वीप कथा अब गावौं। औ सो पदमिनी बरनि सुनावौं॥
निरमल दरपन भाँति बिसेखा। जो जेहि रूप सो तैसइ देखा॥
धनि सो दीप जहँ दीपक बारी। औ पदमिनि जो दई सँवारी॥
सात दीप बरनै सब लोगू। एकौ दीप न ओहि सरि जोगू॥
दिया दीप नहिं तस उँजियारा। सरनदीप सर होइ न पारा।
जंबूदीप कहौं तस नाहीं। लंकदीप सरि पूज न छाहीं॥
दीप गभस्थल आरन परा। दीप महुस्थल मानुस हरा॥
सब संसार परथमैं आए सातौं दीप।
एक दीप नहिं उत्तिम सिंघलदीप समीप॥ 10

(घ) पग घुंघरू बांधि मीरां नाची,
मैं तो मेरे नारायण सूं, आपहि हो गयी साची
लोग कहै, मीरां भइ बावरी, न्यात कहै कुळ-नासी
विस का प्याला राणा भेज्या, पीवत मीरां हांसी
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, सहज मिले अविनासी। 10

अथवा

कान्ह भए बस बाँसुरी के अब कौन सखी हमकों चहिहै।
निस द्यौस रहै सँग साथ लगी यह सौतिन तापन क्यों सहिहै॥
जिन मोहि लियो मनमोहन को रसखानि सदा हमकों दहिहै।
मिलि आओ सबै सखी भाग चलैं अब तो ब्रज मैं बँसुरी रहिहै। 10

2. '''ढोला मारू रा दूहा' में वर्णित मारवणी के विरह और सन्देश में मारवणी की अन्तर्व्यथा झलकती है।'' इस कथन की उदाहरण सहित समीक्षा कीजिए।

अथवा

''विद्यापति प्रेम और शृंगार के अप्रतिम कवि है।'' इस कथन की सोदाहरण विवेचना कीजिए। 16

3. कथात्मकता, ऐतिहासिकता और रसात्मकता की दृष्टि से 'कैमास-करनाटी प्रसंग' की समीक्षा कीजिए।

अथवा

कबीर की काव्यकला पर सोदाहरण प्रकाश डालिये। 16

4. ''सूरदास में जितनी सहृदयता और भावुकता है, उतनी ही चतुरता और वाग्विदग्धता भी है।'' 'भ्रमरगीत' प्रसंग के आधार पर इस कथन की समीक्षा कीजिए।

अथवा

''रसखान वास्तव में रस की खान है।'' संकलित काव्यांशों के आधार पर इस कथन को स्पष्ट कीजिए। 16

5. किन्हीं दो विषयों पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिये- 6×2=12
   (i) आदिकाल की सामान्य विशेषताएँ। 6
   (ii) मीरां की भक्तिभावना। 6
   (iii) तुलसी के काव्य में समन्वय-भावना। 6
   (iv) निर्गुण काव्यधारा की प्रमुख प्रवृत्तियाँ। 6